ज़िम्मेदार नागरिक से कुछ अपेक्षाएँ

डॉ. एम. डी. थॉमस

देश में सामाजिक तालमल रहे और वह तरक्की की बलन्दियों की ओर अगसर होता रहे, इसके लिए बहद ज़रूरी है कि नागरिक ज़िम्मदार बने और वह अपनी भूमिका निभाते रहें। इस लेख में ज़िम्मदार नागरिक से तीन अपक्षाओं की चचा की जा रही है।

शासन-प्रक्रिया में भागीदार होना पहली बात है। समाज या देश को सुचारू रूप से चलाने के लिए शासन-प्रशासन की जरूरत होती है। लेकिन यह समझना कि शासन-प्रशासन तन्त्र से जुड़े कुछ गिने-चुने लोगों के हाथों में ही देश की पूरी ज़िम्मदारी रहती है, बड़ी भूल होगी। किसी राजनीतिक दल को वोट के द्वारा जिताकर और दश की शासन का ठेका उसे सौंपने मात्र से अपनी नागरिकता की इतिश्री नहीं होती है। शासन-प्रशासन की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेना और महत्वपूण निणयों में हिस्सा रखना नागरिक का सतत काम है। शासन के प्रति नकारात्मक रवैया नहीं रखा जाना चाहिए। शासन से खुद को अलग भी नहीं करना चाहिए। अपने नुमाइन्दों से बराबर सम्पक बनाये रखना चाहिए। नागरिकों के प्रति अपना फर्ज बखूबो निभाने के लिए और नागरिकों की माँगों को पूरी करने के लिए अपने नुमाइन्दों को मजबूर कर दिया जाना चाहिए। शासन-प्रशासन के तौर-तरीकों की सतर्कता से जाँच-पड़ताल की जानी चाहिए। अपना निजी काम निकालने के लिए शासक-प्रशासक को घूस देकर उन्हें बिगाड़ने की जिम्मदारी बहुत हद तक नागरिकों की होती है। भ्रष्ट व्यवहारों में गिरे हुए और निकम्म अधिकारियों और कायकताओं को चुनौती देने के साथ-साथ उनकी कुरीतियों का जनता के सामने खुलासा किया जाना चाहिए। देश सलीखे से रहे, खूब तरक्की करे, इस काम में अकेले शासन कामयाब नहीं हो सकती। देश को अपनी मंजिल की ओर ले चलने में हर वक्त शासन के साथ रहना नागरिक का कतव्य है। सहकारी रवैये के साथ शासन-प्रशासन तन्त्र की मदद करना और उस रूप में शासन-प्रशासन को मज़बूत करना नागरिकों की भूमिका है।

प्रतिक्रियाओं को शांतिपूण तौर-तरीके से ज़ाहिर करना दूसरी बात है। इस संसार और इसके जीवन की सबसे अहम् हकीकत है सीमा। हर चीज की, हर इकाई की, अपनी हद होती है। इसलिए हर बात में कुछ रह जाना स्वाभाविक है। तमन्नाएँ अममन अधूरी रह जाती हैं, माँगें कभी-कभार पूरी नहीं होती हैं और सपने अवसर साकार नहीं होते हैं। नागरिकों की जरूरतों को हरसंभव पूरा करने के लिए योजनाएं चलाना शासन-प्रशासन का उत्तरदायित्व है। फिर भी, सभी योजनाएं कारगर हों, यह नाममकिन है। साथ ही, शासकों-प्रशासकों में खुदगर्जी, फिरकापरस्ती, भ्रष्टाचार, तरफ़दारी, बइन्साफी, आदि के चलते नागरिकों की भलाई के साथ खिलवाड़ हो, यह कोई ताज्जुब की बात नहीं है। एसे हालात में प्रतिक्रियाएं ज़ाहिर करना नागरिकों का हक है। लेकिन, नाजायज तरीके से प्रतिक्रिया व्यक्त करना शरीफनागरिक व लायक हरकत नहीं है। बावजूद इसके, दलीय राजनीति, दादागिरी, गुण्डागर्दी, आदि दूषित भावनावों से ग्रस्त होकर कइ लोग अपना गुस्सा हिंसात्मक तरीके से प्रकट करने लगते हैं। वे दूसरों के जान-माल को बबाद करने लगते हैं और देश की सम्पत्ति तहस-नहस करने लगते हैं। इस प्रकार दूसरे की निजी और देश की सावजनिक चीजों को नष्ट करना महज बचकाना व्यवहार है। असल में यह पागलपन है और बोमार मानसिकता का प्रमाण है। वया लाखों-करोड़ों की बरबादी के साथ-साथ बकसूर लोगों का कत्ल अपनी माँगें पूरी करने का ज़रिया है? वया यह हरकत सभ्य समाज के लिए कलंक नहीं है? वया यह अपनी सँस्कृति का ढिढ़ोरा पोटने वाले भारत देश को शर्मिन्दा करने वाली बात नहीं है? सचमुच, समृचे देश को बबादी की ओर ले जाने वाले एसे हरकतों पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। नुकसान के लिए जिम्मदार लोगों द्वारा उसकी क्षतिपूर्ति का कानूनी इन्तजाम भी किया जाना चाहिए। अंधी भेड़-चाल और भीड़-चाल से बचे रहे, सभ्य और परिष्कृत तरीके से अपनी प्रतिक्रियाएं ज़ाहिर किया जाय, शासन-प्रशासन के साथ सीधा गुफ्तगू और शांतिपूर्ण तौर-तरीकों से समस्याओं और शिकायतों का हल ढूँढ़ा जाय, यह जिम्मदार नागरिकों का अहम् फज है।

अमोर-गरीब की खाई पाटना तीसरी बात है। एक-दो साल पहले अखबारों से यह खबर पढ़ने को मिली थी कि दुनिया का सबसे धनी आदमी भारतीय है। इस बात की हकीकत कुछ भी हो, एक बात निश्चित है कि भारत के करीब दस से बीस फीसदी लोग बहुत धनवान हैं। ऐसा लगता है कि उनमें से ज्यादातर यह भी नहीं जानते इतनी धन-दौलत का इस्तेमाल किस ढंग से किया जाय। उनमें से बहुतों के लिए पैसा ही असली खुदा है, चाहे वे किसी भी देवता, देवालय और पूजा पद्धति से जुड़े हों। साँसारिक पूंजी में ही उनका हृदय भी फँसा रहता है। ताज्जुब की बात यह है कि, देश का कर्ज चुराने वाले गुनाहगारों में मालदार वर्ग के लोग ही ज्यादा पाये जाते हैं। बड़े धक्के की बात यह है कि उन बहुत मालदार वर्ग में अनेक राजनेता, धर्मनेता, धर्म-संगठन और देवालय भी शुमार हैं। अपने काम-धन्धे के मुनाफे से हो, श्रद्धालुओं के योगदान से हो या अन्य किसी मार्ग से, धनवान होना अपने आप में बुरी बात नहीं है। विडम्बना की बात यह है कि उनमें से कुछों को छोड़कर बाकी सब अपनी धन-दौलत को अपनी और अपनी बिरादरी के लोगों लिए ही इस्तेमाल करते हैं। भारतीय समाज की दूसरी तरफ गरीबी रेखा के नीचे रहकर अपनी अजीविका के लिए बुरी तरह से संघर्ष करने वाले बेसहारों के दर्द को नहीं पहचान पाना इन धनियों की बड़ी खामी है। यह बात धार्मिक होने का दावा करने वाले इस देश के आध्यात्मिक खोखलेपन का सबूत है। ईसा की बात बहुत सार्थक लगती है, 'सूई के नाके से होकर ऊँट का निकलना अमीर द्वारा ईश्वर के राज्य में प्रवेश करने से सहज है'। जीने के लिए तड़पने वाले अपने भाई-बहनों के प्रति मानवीय संवेदनाओं से च्युत होना इन्सानियत को ही दागयुक्त करने के बराबर है। करीब तीस से चालीस फीसदी गरीबों के बीच करोड़ों-अरबों की लागत से बनने वाले मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा और अन्य आलीशान भवन वैया अधार्मिकता और मूल्यहीनता के प्रमाण नहीं हैं? देवालयों और मनुष्य-खुदाओं पर मुक्त हाथ से धन-दौलत उँड़ेलने वाले अन्धविश्वासी लोगों के मन में कम-से-कम हजार-पाँच हज़ार लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान दिलाने की बात क्यों नहीं आती? वास्तव में यह एक पेचीदा सवाल है। देश में अमीर और गरीब के दर्मियान मौजूद खाई पाटने में हरमुमकिन कोशिश होती रहे, इन्सान-इन्सान में बराबरी का भाव कायम हो, देश खुशहाल बने और देश सन्तुलित रूप से प्रगति की ओर अगसर करे, इसके लिए धार्मिक और गैर-धार्मिक तबकों व धनी वर्ग के नागरिकों द्वारा गरीबों और बेसहारों के हित में पहल करना इन्सानियत और आध्यात्मिकता के नाते अनिवार्य है।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS